

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ, दिल्ली

सदस्य प्रकाशकों के प्रवेश, कर्मठ लेखक, निर्भीक संपादक तथा निरपुह स्वतंत्रता सेनानी

पंडित देवनारायण द्विवेदी

के सम्मान में समर्पित

अभिनंदन-पत्र

मान्यवर !

आज हम अतृप्त-कृत्य हैं कि आपने हमारा अनुरोध स्वीकार कर हमारे बीच पधारने की कृपा की। आपके बहुआयामी व्यक्तित्व तथा कृतित्व के प्रति हम अपनी भावनाएँ समर्पित करते हैं।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के २०वें वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर हमें बड़ा दिन याद आ रहा है जब आपने संघ के अध्यक्ष पद को दो बार चुनोक्ति किया। अपने कार्यकाल में आपने प्रकाशन जगत की जो-गारिमा बढ़ाई, जो गौरव प्रदान किया वह आज भी संघ के लिए प्रेरणा स्रोत है। 'महाजनः देन कतो स पन्थः' जैतिक के आधार पर संघ आपके दिखाये रास्ते पर चल कर प्रगति कर रहा है। आपके मार्ग-दर्शन के हम आभारी हैं।

आपने एक प्रकाशन संस्थान आनन्दभवन निधि, वाराणसी से सम्बद्ध होकर हिन्दी साहित्य में ऐसे महत्वपूर्ण ग्रंथों का प्रकाशन किया, जो साहित्य की धरोहर हैं। आपके प्रबंध में प्रकाशित वे पुस्तकें आपकी दूरदर्शी दृष्टि तथा प्रतिभा की चोतक हैं। श्रेष्ठ और स्थायी महत्व की पुस्तकें प्रकाशित कर आपने एक कीर्तिमान स्थापित किया।

आप अपने जीवन की साहित्यिक भाषा में प्रेमचंद प्रसाद, निराला तथा मौधलीशरण गुप्त के सहभागी रहे। आपकी रचनाएँ हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान रखती हैं। मुँशी प्रेमचन्द ने आपके उपन्यास 'कर्तव्यापात' की समीक्षा करते हुए यहाँ तक लिखा कि 'हिन्दी में इतना अच्छा उपन्यास अब तक बेरी नजर से नहीं गुजरा'। आपकी मौलिक रचनाओं ने जहाँ हिन्दी साहित्य की भी कृति की वही आपने बंगाल की अनेक श्रेष्ठ पुस्तकों का हिन्दी अनुवाद कर हिन्दी के भंडार को भरा। आपके साहित्यिक योगदान के लिए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा श्री विष्णो जी हरि ने बड़ी प्रशंसा की।

तत्कालीन पराधीन भारत में राष्ट्रीय जन-जागृति पैदा करने में आपके लेखन तथा कार्य पर बड़ा योगदान रहा। आप कलकत्ता की 'हिन्दी मातृव परिषद्' के संस्थापकों में थे। अपनी राष्ट्रीय गतिविधियों तथा लेखन के कारण तत्कालीन गुप्तचर विभाग की कड़ी नजर में आप रहे। आपकी कई पुस्तकें तत्कालीन परिस्थिति में राज्यद्रोह के कारण जप्त हुईं। सन् १९२१ में असहयोग आन्दोलन के समय आपने अनेक बड़े राष्ट्रीय नेताओं के साथ कारावास भोगा।

वाराणसी से प्रकाशित 'आशी समाचार' पत्र के आप प्रधान संपादक रहे। आपकी देशभक्ति तथा राष्ट्रीय विचारधारा के कारण समाचार पत्र सरकार का कोपभाजन बना, लेकिन आपने अपनी विचारधारा को नहीं बदला तथा अपनी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को देशहित में सर्वोपरि रखा।

जीवन के जिस भी क्षेत्र में आपने काम किया, चाहे वह प्रकाशन हो, लेखन हो, संपादन हो तथा राष्ट्रीय गतिविधियाँ रही हों, सब में आपने अपनी लगनकी छाप छोड़ी। आपका जीवन हमारे लिए प्रेरणा-स्रोत है।

आप आत्म-प्रशंसा से दूर रहने वाले सफल प्रकाशक, कर्मठ लेखक, निष्पक्ष समालोचक, निर्भीक संपादक तथा निरपुह स्वतंत्रता सेनानी हैं। आपकी निरपुह राष्ट्रभक्ति का यह एक खासियत पहलू है कि स्वतंत्रता सेनानी कृति के लिए आनन्दन-पत्र भरने से इन्कार करते हुए आपने कहा—'देशभक्ति बलिदान का नाम है, न कि जनता की खाड़ी कमाई से पैशन लेने का।' 'कर्मचरैः साधयतेऽस्तु मा कर्मैः कथञ्चन' नीति की हम जित्तों के अपने आत्मसात कर लिया है।

मान्यवर !

आपके कर्मठ एवं बहुआयामी व्यक्तित्व से प्रेरणा लेकर अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ आपका हार्दिक बंदन और अभिनंदन करता है। जीवन के अन्तिम वर्ष में आपने प्रवेश किया है, हमारी प्रार्थना है कि आप दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें तथा आपकी कार्यक्षमता धीरे-धीरे बढ़े।

हमारा बंदन और अभिनंदन स्वीकार कर हमें उपकृत करें

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ

दरि दिल्ली

तारीख ३० अक्टूबर १९८४

आपका समभावपूर्ण

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ







